मलेरिया का आतंक

नवनीत कुमार गुप्ता

आज जहां दुनिया में कैंसर, एड्स, बर्ड फ्लू जैसे रोगों के लिए दवाएं विकसित की जा रही हैं, वहीं एक बार फिर मलेरिया से होने वाली मौतों ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। सदियों से दुनिया भर में करोड़ों लोगों की जान लेने वाले मलेरिया के खिलाफ मनुष्य की मोर्चाबंदी लगातार जारी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1955 में घोषणा की थी कि मलेरिया पर मनुष्य की विजय का समय आ गया है और जल्दी ही यह रोग समाप्त हो जाएगा। मगर, मलेरिया ने पलटवार किया और आज यह दुनिया भर में हर साल करीब 22.50 करोड़ लोगों पर हमला करके 7-8 लाख लोगों की जान ले रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2010 में विश्व भर में करीब 22 करोड़ 50 लाख लोग मलेरिया से पीड़ित हुए और लगभग 7 लाख 81 हज़ार मरीजों की मृत्यु हो गई। कई लोगों का अनुमान तो यह है कि मलेरिया के मरीज़ों और इससे मरने वालों की वास्तविक संख्या इससे भी कहीं अधिक हो सकती है।

पिछले लगभग 300 वर्षों से मलेरिया के इलाज में काम आने वाली कड़वी कुनैन आज बेअसर साबित हो रही है। क्लोरोक्विन से भी इसका कारगर इलाज नहीं हो पा रहा है। डीडीटी और दूसरे कीटनाशकों के छिड़काव से आस जगी थी कि अब मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों का सफाया हो जाएगा लेकिन वे ग्रामीण इलाके ही नहीं बल्कि शहरी इलाकों में भी पूरी ताकत से लौट रहे हैं। मलेरिया को पहले ग्रामीण क्षेत्रों का रोग माना जाता था, अब यह शहरी इलाकों का भी एक गंभीर रोग बन चुका है।

भारत में मलेरिया का प्रकोप सदियों से रहा है। आज़ादी से पहले तक देश की लगभग एक चौथाई आबादी मलेरिया से प्रभावित होती थी। 1947 में भारत की 33 करोड़ आबादी में से 7.5 करोड़ लोग मलेरिया से पीड़ित हुए थे और 8 लाख लोग मारे गए थे।

इस घातक रोग पर काबू पाने के लिए भारत सरकार ने 1953 में राष्ट्रीय मलेरिया *नियंत्रण* कार्यक्रम लागू किया था। यह कार्यक्रम काफी सफल रहा था और इससे मलेरिया के रोगियों की संख्या में काफी कमी आई थी। इस कार्यक्रम की सफलता से उत्साहित होकर सरकार ने 1958 में राष्ट्रीय मलेरिया *उन्मूलन* कार्यक्रम शुरू किया। डीडीटी व अन्य कीटनाशकों के छिड़काव में ढील के कारण 1960 और 1970 के दशक में मलेरिया के मरीज़ों की संख्या तेज़ी से बढ़ी और 1976 में राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के तहत देश में 60 लाख 45 हज़ार केस दर्ज किए गए। मलेरिया की रोकथाम के तमाम प्रयासों के चलते रोगियों की संख्या काफी घटी थी लेकिन 1990 के दशक में यह रोग नई ताकत के साथ वापस लौट आया।

इसकी वापसी के कारण थेः

- कीटनाशकों के खिलाफ मच्छरों का प्रतिरोधी हो जाना;
- खुले स्थानों में मच्छरों की बढ़ती तादाद;
- जल परियोजनाएं, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण;
- मलेरिया परजीवी का रूप बदलने और क्लोरोक्विन तथा मलेरिया की अन्य दवाइयों के खिलाफ *प्लाज़्मोडियम फाल्सीफेरम* में प्रतिरोध का विकास।

मलेरिया की समस्या के लिए ज़िम्मेदार जीव है नन्हा-सा मच्छर। मच्छर खतरनाक रोगाणु वाहक कीट है। *एनाफिलीज़* प्रजाति के मादा मच्छर मलेरिया फैलाते हैं। मादा मच्छर मनुष्यों का खून चूसते हैं जबकि इसी प्रजाति के नर मच्छर फूल वगैरह का रस चूसते हैं। असल में मलेरिया एक सूक्ष्म परजीवी *प्लाज़्मोडियम* के कारण होता है। इसकी चार प्रजातियों *प्लाज़्मोडियम फाल्सीफेरम*, *प्लाज़्मोडियम वाइवैक्स*, *प्लाज़्मोडियम ओवेल*, और *प्लाज़्मोडियम मलेरी* से मनुष्यों को मलेरिया रोग होता है।

इस बात का पता 1880 में फ्रांसीसी चिकित्सक चार्ल्स लुई अल्फोंसे लेवेरान ने लगाया कि मलेरिया एक सूक्ष्म

प्रोटोज़ोआ परजीवी के कारण होता है। लेकिन, तब यह पता नहीं था कि यह परजीवी मनुष्यों के शरीर में कहां से आता है। इस रहस्य का पता लगाया 1898 में भारतीय सेना के चिकित्सक रोनाल्ड रॉस ने। उन्होंने सिकंदराबाद व कलकत्ता में मच्छरों पर लगातार परीक्षण किए और मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों के आमाशय की परत में उभरे मस्सों से फूटते हंसिए के आकार के हज़ारों सूक्ष्मजीव देखे। वे मच्छर की लार ग्रंथियों में जा रहे थे। तब रॉस ने कहा कि मलेरिया के रोगाणुओं को मनुष्यों के शरीर में मच्छर फैलाते हैं। रोनाल्ड रॉस को मनुष्यों के शरीर में मच्छरों द्वारा परजीवी पहुंचाने की खोज के लिए 1902 में और चार्ल्स लेवेरान को मलेरिया परजीवी की खोज के लिए 1907 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस परजीवी सूक्ष्मजीव को *एनाफिलीज़* प्रजाति के मादा मच्छर फैलाते हैं। जब वे किसी मलेरिया के रोगी का खून चूसते हैं तो मलेरिया परजीवी उनकी लार ग्रंथियों में पहुंच जाते हैं। यह मच्छर जब किसी अन्य व्यक्ति को काटता है तो परजीवी मनुष्य में पहुंचते हैं। फिर ये रक्त वाहिनियों के ज़रिए लिवर यानी यकृत में पहुंचते हैं। वहां परिपक्व होकर लाखों मेरोज़ॉइट बनाते हैं। वे रक्त प्रणाली में पहुंच कर लाल रक्त कोशिकाओं में लाखों की तादाद में बढ़ते हैं। 48 से 72 घंटे के भीतर वे लाल रक्त कोशिकाएं फट जाती हैं। इस तरह लाल रक्त कोशिकाएं बड़ी संख्या में नष्ट हो जाती हैं और मरीज़ एनीमिया का शिकार हो जाता है। मलेरिया के मुख्य लक्षण हैं - एनीमिया, ठंड व कंपकंपी के साथ बुखार, ऐंठन, सिरदर्द, मल में खून, उल्टी, पसीना निकलना और बेहोशी। मलेरिया के लक्षण आम तौर पर 10 दिन से 4 सप्ताह के भीतर प्रकट हो जाते हैं। लक्षण हर 48-72 घंटे बाद प्रकट होते हैं। मलेरिया की पुरानी प्रचलित दवा कुनैन थी। इसे सिन्कोना के पेड़ की छाल से बनाया जाता था। 1943 में क्लोरोक्विन दवा की खोज हुई जिससे मलेरिया के उपचार में बहुत मदद मिली। मनुष्यों को मलेरिया से बचाने के लिए टीके की खोज भी जारी है।

आनुवंशिकीविद मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों के जीन में हेर-फेर करके ऐसे मच्छर तैयार करने की कोशिश कर रहे हैं, जिनके शरीर में परजीवी जाना ही न चाहें या ऐसे मच्छर मनुष्य का खून न चूसना चाहें। हमारे देश में मलेरिया के उपचार के लिए व्यापक स्तर पर कार्य किया जा रहा है। केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने भी कुछ समय पूर्व मलेरिया के इलाज के लिए 'ई-माल' तथा 'आब्लाक्विन' नामक औषधियां बनाई हैं। मलेरिया की रोकथाम के लिए वैज्ञानिकों का ध्यान पुराने प्रचलित और प्राकृतिक तरीकों की ओर भी गया है। मच्छरदानियों को रसायनों में भिगा-सुखा कर काम में लाया जा रहा है। ऐसी दवा-बुझी मच्छरदानियों से कई देशों में लोग मलेरिया की मार से बच रहे हैं। मच्छरों के लार्वा खाने वाली मछलियों की संख्या बढ़ाने पर भी बल दिया जा रहा है। इनके अलावा मेंढक और अन्य जलचर जीवों की संख्या बढ़ाने पर भी विचार किया जा रहा है। इस प्रकार पूरी दुनिया में मलेरिया से निपटने के विभिन्न उपाय खोजे जा रहे हैं ताकि इस बीमारी से निजात पाई जा सके। इस कार्य में हमें भी अपने घरों के आसपास पानी जमा नहीं होने देना चाहिए और कूलरों में भी नियमित तौर पर पानी बदलते रहना चाहिए ताकि वहां मच्छर न पनप सकें। ***(स्रोत फीचर्स)***

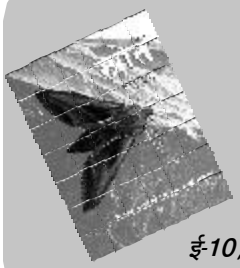

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत 150 रुपए

संस्थागत 300 रुपए

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

के पते पर भेजें।